لَن تَنَالُواْ ٱلۡبِرَّ حَتَّىٰ تُنفِقُواْ مِمَّا تُحِبُّونَۚ وَمَا تُنفِقُواْ مِن شَيۡءٖ
فَإِنَّ ٱللَّهَ بِهِۦ عَلِيمٞ ٩٢ ۞ كُلُّ ٱلطَّعَامِ كَانَ حِلّٗا لِّبَنِيٓ
إِسۡرَٰٓءِيلَ إِلَّا مَا حَرَّمَ إِسۡرَٰٓءِيلُ عَلَىٰ نَفۡسِهِۦ مِن قَبۡلِ أَن
تُنَزَّلَ ٱلتَّوۡرَىٰةُۗ قُلۡ فَأۡتُواْ بِٱلتَّوۡرَىٰةِ فَٱتۡلُوهَآ إِن كُنتُمۡ صَٰدِقِينَ
٩٣ فَمَنِ ٱفۡتَرَىٰ عَلَى ٱللَّهِ ٱلۡكَذِبَ مِنۢ بَعۡدِ ذَٰلِكَ فَأُوْلَٰٓئِكَ
هُمُ ٱلظَّٰلِمُونَ ٩٤ قُلۡ صَدَقَ ٱللَّهُۗ فَٱتَّبِعُواْ مِلَّةَ إِبۡرَٰهِيمَ حَنِيفٗاۖ
وَمَا كَانَ مِنَ ٱلۡمُشۡرِكِينَ ٩٥ إِنَّ أَوَّلَ بَيۡتٖ وُضِعَ لِلنَّاسِ لَلَّذِي
بِبَكَّةَ مُبَارَكٗا وَهُدٗى لِّلۡعَٰلَمِينَ ٩٦ فِيهِ ءَايَٰتُۢ بَيِّنَٰتٞ مَّقَامُ
إِبۡرَٰهِيمَۖ وَمَن دَخَلَهُۥ كَانَ ءَامِنٗاۗ وَلِلَّهِ عَلَى ٱلنَّاسِ حِجُّ ٱلۡبَيۡتِ
مَنِ ٱسۡتَطَاعَ إِلَيۡهِ سَبِيلٗاۚ وَمَن كَفَرَ فَإِنَّ ٱللَّهَ غَنِيٌّ عَنِ
ٱلۡعَٰلَمِينَ ٩٧ قُلۡ يَٰٓأَهۡلَ ٱلۡكِتَٰبِ لِمَ تَكۡفُرُونَ بِـَٔايَٰتِ ٱللَّهِ
وَٱللَّهُ شَهِيدٌ عَلَىٰ مَا تَعۡمَلُونَ ٩٨ قُلۡ يَٰٓأَهۡلَ ٱلۡكِتَٰبِ لِمَ
تَصُدُّونَ عَن سَبِيلِ ٱللَّهِ مَنۡ ءَامَنَ تَبۡغُونَهَا عِوَجٗا وَأَنتُمۡ
شُهَدَآءُۗ وَمَا ٱللَّهُ بِغَٰفِلٍ عَمَّا تَعۡمَلُونَ ٩٩ يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ
ءَامَنُوٓاْ إِن تُطِيعُواْ فَرِيقٗا مِّنَ ٱلَّذِينَ أُوتُواْ ٱلۡكِتَٰبَ يَرُدُّوكُم
بَعۡدَ إِيمَٰنِكُمۡ كَٰفِرِينَ ١٠٠ وَكَيۡفَ تَكۡفُرُونَ وَأَنتُمۡ تُتۡلَىٰ
عَلَيۡكُمۡ ءَايَٰتُ ٱللَّهِ وَفِيكُمۡ رَسُولُهُۥۗ وَمَن يَعۡتَصِم بِٱللَّهِ
فَقَدۡ هُدِيَ إِلَىٰ صِرَٰطٖ مُّسۡتَقِيمٖ ١٠١

Theme

Criteria of righteousness. Lawful and unlawful food for the Children of Israel. The first House of Allah on Earth. Disbelief of the Jews and Christians. Do not obey the Jews or Christians.	नेकी का मेयार। बनी इसराईल के लिए हलाल और हराम खाने। ज़मीन पर अल्लाह तआला का पहला घर। यहूद व नसारा का कुफ़्र। यहूद व नसारा की इताअत न करो।

Tarjumani

You can never attain righteousness unless you spend in the cause of Allah that which you dearly cherish; and whatever you spend, surely, it is known to Allah. All food, that is lawful in Islamic Law, was also Halal (lawful) for the children of Israel except what Israel (Yaqoob) made Haram (unlawful) for himself before the Tawrat (Torah) was revealed to Musa. Ask them: "Bring the Tawrat (Torah) and read a passage from it in support of your objection, if what you say is true. Then, whoever fabricates a lie against Allah after this, will indeed be unjust. Say: "Allah has declared the truth. If you are sincere, then follow the faith of	तुम नेकी को नहीं पहुँच सकते जब तक कि अपनी वो चीज़ें (ख़ुदा की राह में) ख़र्च न करो जिन्हें तुम अज़ीज़ रखते हो, और जो कुछ तुम खर्च करोगे अल्लाह उससे बेख़बर न होगा	खाने की ये सारी चीज़ें (जो शरीअते-मुहम्मदी में हलाल हैं) बनी-इसराईल के लिए भी हलाल थीं, अलबत्ता बाज़ चीज़े ऐसी थीं जिन्हें तौरात के नाज़िल किए जाने से पहले इसराईल (हज़रात याकूब) ने ख़ुद अपने ऊपर हराम कर लिया था	उनसे कहो, अगर तुम (अपने एतिराज़ में) सच्चे हो तो लाओ तौरात और पेश करो उसकी कोई इबारत--- इसके बाद भी जो लोग अपनी झूटी घड़ी हुई बातें अल्लाह की तरफ़ मंसूब करते रहें वही दरहकीकत ज़ालिम हैं	कहो, अल्लाह ने जो कुछ फ़रमाया है सच फ़रमाया है, तुमको यकसू होकर

Ibraheem; who was upright and not a mushrik." Indeed, the first House for the worship of Allah ever built for mankind is the one at Bakkah (Makkah), a blessed site and a guidance for all the worlds. In it are clear signs; the Station of Ibraheem (Abraham). Whoever enters it, is safe. Performance of Hajj (pilgrimage) to this House is a duty to Allah for all who can afford the journey to it; and the one who disobeys this commandment should know that Allah is Self-sufficient, beyond the need of any from the worlds. Say: "O people of the Book! Why do you deny the revelations of Allah? Allah Himself is a witness to your actions. Say: "O people of the Book! Why do you obstruct the believers from the path of Allah and desire that they follow the crooked way while you your selves are witnesses to the Truth? Allah is not unmindful of what you do." O believers! If you were to obey a group of those who were given	इबराहीम के तरीक़े की पैरवी करनी चाहिए, और इबराहीम शिर्क करनेवालों में से न था	बेशक सबसे पहली इबादतगाह जो इनसानों के लिए तामीर हुई वह वही है जो मक्का में वाके है	उसको खैर व बरकत दी गई थी और तमाम ज़हानवालों के लिए मर्कज़े-हिदायत बनाया गया था	इसमें खुली हुई निशानियाँ हैं, इबराहीम का मकामे-इबादत है, और इसका हाल यह है कि जो इसमें दाख़िल हुआ मामून हो गया	लोगों पर अल्लाह का यह हक़ है कि जो इस घर तक पहुँचने की इस्तिताअत रखता हो वह इसका हज करे, और जो कोई इस हुक्म की पैरवी से इनकार करे तो उसे मालूम हो जाना चाहिए कि अल्लाह तमाम दुनियावालों से बेनियाज़ है	कहो, ऐ अहले-किताब, तुम क्यों अल्लाह की बातें मानने से इनकार करते हो? जो हरकतें तुम कर रहे हो अल्लाह सब कुछ देख रहा है	कहो, ऐ अहले-किताब, यह तुम्हारी क्या रविश है कि जो अल्लाह की बात मानता है उसे भी तुम अल्लाह के रस्ते से रोकते हो और चाहते हो कि वह टेढ़ी राह चले, हालाँकि तुम ख़ुद (इसके राहे-रास्त होने पर) गवाह हो	तुम्हारी हरकतों

the Book, they would turn you back from belief to unbelief. Just think, how can you turn away from belief on their statements, when Allah's revelations are being recited to you and Allah's Rasool is among you? Who-ever holds fast to Allah, will indeed be guided towards the Right Way.	से अल्लाह गाफ़िल नहीं है	ऐ लोगो जो ईमान लाए हो, अगर तुमने इन अहले-किताब में से एक गरोह की बात मानी तो ये तुम्हें ईमान से फिर कुफ़्र की तरफ़ फेर ले जाएँगे	तुम्हारे लिए कुफ़्र की तरफ़ जाने का अब क्या मौका बाकी है ज़बकि तुमको अल्लाह की आयात सुनाई जा रही हैं और तुम्हारे दरमियान उसका रसूल मौजूद है? जो अल्लाह का दामन मज़बूती के साथ थामेगा वह ज़रूर राहे-रास्त पा लेगा	
Tafsir	